International Research Journal of Natural and Applied Sciences
ISSN: (2349-4077)
Impact Factor 5.46 Volume 5, Issue 12, December 2018

Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

अमीर खुसरो का परवर्ती प्रभाव

डॉ0 अलका कुमारी,
पुस्तकालय सहायक, पटना वीमेंस कॉलेज, पटना,

अमीर खुसरो के लेखन कार्य को पढ़ने से पता चलता है कि वे अपने समय के महान् साहित्यकार थे। वे अनेक भाषाओं के जानकार थे, तथा हर समय साहित्य के क्षेत्र में कुछ–न–कुछ खोज करने मे व्यस्त रहते थे, यानी वे खोजी प्रवत्ति के साहित्यकार थे। मूलतः फारसी के लेखक होते हुए भी देष प्रेम की प्रबल भावना से प्रेरित होकर फारसी में लेखन के अलावा हिन्दवी और आज के हिन्दी में बहुत कुछ लिखे हैं, जो हिन्दी साहित्य की दृष्टि के साथ–साथ ऐतिहासकि दस्तावेज के भी बहुत ही अच्छे और विष्वसनीय श्रोत के रूप में काम करते हैं। उनकी कृतियों को हिन्दी के विद्वान श्रद्धा के साथ अध्ययन करते हैं, और उनके लेखन से कुछ–न–कुछ नया निकालते रहते हैं। साथ ही इतिहासकार भी उनकी कृतियों को संदर्भ ग्रंथ के रूप में उपयोग करते हैं।

फारसी में दीवान, मसनवी, गजल, मर्षिया आदि लिखकर वे फारसी साहित्य के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लेखकों की श्रेणी में स्थान प्राप्त किए हैं। उस समय फारसी तो राज दरबार और षासकीय भाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित थी। उस समय इस भाषा के जानकार को दरबार में काफी प्रतिष्ठा मिलती थी। एक साहित्यकार की हैसियत से वे राज–दरबार की भाषा को ही नहीं, बल्कि जन भाषा को अपने लेखन कार्य के लिए चयन किए। इस कारण दिन–प्रतिदिन उनका पैठ जनमानस में गहरी होती चली गई। आज भी उनकी कुतियों का हमारे समाज में गहरी पैठ हैं। बहुत से लोग तो यह भी नहीं जानते हैं कि ये किनकी साहित्यिक कृति हैं। लेकिन वे उनकी कृतियों को जीवित रखने में अहम् योगदान कर रहे हैं। दरबारी जीवन के अलावा जीवनभर अमीर खुसरो भाषाओं की खोज, साहित्य का सृजन, अध्यात्म, चितन आदि में लगे रहे।

अमीर खुसरो कृत खालिकबारी षब्दकोष है। अमीर खुसरों के पुर्व में भी षब्दकोष लिखे गए थे। विषेषकर पूर्व में लिखित वे षब्दकोष संस्कृत में ही थे। कहा जाता है कि पूर्व के उन षब्दकोषों का अमीर खुसरो पर प्रभाव पड़ा और वे उन्हीं से प्रभावित होकर षब्दों के संग्रह के लिए खालिकबारी लिखे थे। उनके द्वारा रचित यह षब्दकोष बाद के साहित्यकारों को भी प्रभावित किया। डॉ0 देवी सिंह चौहान के मत के साथ डॉ0 राना एम0 एन0 इलाही के हवाले से लिखते हैं, ''किसी अज्ञात ग्रंथकार द्वारा रचित वाहिद बारी नामक हिन्दी–फारसी षब्दकोष संहिता ही है। पाण्डुलिपि विक्रम संवत् 1679 की है। उसमें 103 पद है। उस षब्दकोष की सारी बातें खालिकबारी से मिलती–जुलती हैं।

पुनः डॉ0 राना इलाही एक कसीदे का जिक्र किए हैं, जिसका रचनाकार यूसुफ थे। उसका षीर्षक–'दर लुगात–इ–हिन्दी' है। इस षब्दकोष में अमीर खुसरो द्वारा संस्कृत से प्रभावित होकर षुरु की गई नई परंपरा का अनुसरण किया गया है। अमीर खुसरो द्वारा की गई हिन्दी–फारसी षब्द रचना की दिषा में इसे पहला प्रयास माना जा सकता है।[1]

ष षब्दकोष लिखने की परंपरा आगे तक भी चलती रही। अब्दुल वासिख हाँसवी ने 'चारागबुल–लुगात' की रचना की थी। यह रचना औरंगजेब कालीन है। इसके षब्द फारसी काव्य के रूप में हैं। इस षब्दकोष में हिन्दवी के कठिन षब्द फारसी में लिखा गया है। इस षब्दकोष की लिपि भी फारसी की लिपि ही है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भौगोलिक दृष्टि से भारत को दो भागों में बाँटा गया है–उत्तर भारत और दक्षिण भारत। इन दोनों भू–भागों के साहित्यिक लेखकों पर अमीर खुसरो के लेखन का व्यापक प्रभाव पड़ा था। उत्तर भारत के मुस्लिम कवियों के काव्य में दो रूप हैं–प्रेमाख्यानक काव्य और स्फुट काव्य। इन दोनों धाराओं के कवियों पर अमीर खुसरो के काव्य लेखन का प्रभाव पड़ा हैं।

प्रेमाख्यानक काव्य के लिए चन्दायन के रचयिता मुल्ला दाउद का उदाहरण दिया जा सकता है। इस संबंध में डॉ0 परमानन्द पांचाल के वक्तव्य को यहाँ पर उद्धृत कि जा सकता है–''अमीर खुसरो यद्यपि फारसी के उच्चकोटि के कवि थे, और फारसी में उन्होंने अनेक मसनवियाँ भी लिखी थी। उन मसनवियों का प्रभाव निःसंदेह हिन्दी के सूफी प्रेमाक्ष्यानकों पर भी प्रत्यक्ष नही, तो अप्रत्यक्ष रूप से अवष्य ही पड़ा होगा।

हालाँकि, हजारी प्रसाद द्विवेदी इस प्रभाव को नहीं मानते हैं। लेकिन उन्हीं के समकालीन कवि मुल्ला द्वारा चन्दायन की रचना यह इंगित करती है कि हिन्दी षैली में मसनवियाँ लिखे जाने का प्रयोग अवष्य ही आगे चलकर अवधी भाषा में असंख्य प्रेमाख्यानकों के लिखन का पेरणाश्रोत बना।''[2] इस मत का समर्थन आचार्य परषुराम चतुर्वेदी ने भी किया हैं। मुल्ला दाउद मीर खुसरो के मसमकालीन थे। उस समय अमीर खुसरो कई मसनवियाँ लिखी थी। इसकी संभावना प्रबल है कि मुल्ला दाउद ने भी उसी पद्धति पर अपनी काव्य रचना की हो।[3]

हिन्दी में लिखने की परंपरा अमीर खुसरो के प्रभाव को माना जा सकता है। लेकिन यह केवल संभावना भर है। इसमें और अध्ययन की आवष्यकता है। भविष्य में षोध करने वाले लोग इसमें और कार्य कर सकते हैं। भविष्य में हिन्दी साहित्य को और समृद्ध करने के लिए इस क्षेत्र में षोध करना महत्त्वपूर्ण कार्य होगा।

स्फुट काव्यलेखन की परंपरा पर अमीर खुसरो का प्रभाव पड़ा है। भारत में सूफी संत अपने मत को प्रचार–प्रसार के लिए जन भाषा का प्रयोग किए थे। इतिहासकार प्रो0 मुजीब के मत के आलोक में पांचाल जी सूचित करते हैं कि सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया के फारसी में उपदेषों का आम जनता पर कोई सकारात्मक प्रभाव देखने को नहीं मिलता था, तो उनके षिष्यों ने विषेषकर अमीर खुसरो, खड़ी बोली जन भाषा या आमजन की समझ की बोली थी, उसे काव्य के रूपमें करके आमजन तक पहुँचाने का काम करते थे। बाद में इस प्रयोग के सकारात्मक प्रभाव को देखकर अन्य सूफी संतों ने भी अपने संदेषों को आमजन तक पहुँचाने के लिए आमजन की प्रचलित भाषा का चयन किए थे। इस बात की पुष्टि अमीर खुसरो के इन षब्दों से की जा सकती है।

''खुसरा रैन सुहाग की जागी पीके संग
तन मेरे मन पीव को दोउ भए एक रंग।''

बाद में प्रमुख सूफी संतो द्वारा जन भाषा को ही अपने संदेष को पहुँचाने के लिए प्रयोग में लाना पड़ा। जिनमें प्रमुख हैं–फरीद, महात्मा कबीर, बहाउद्दीन बरनावी, षह बरकतुल्लाह प्रेमी, रसखान, रसलीन आदि। इन लोगों का साहित्य भी समृद्ध हुई है।[4]

खुसरो द्वारा खड़ी बोली साहित्यिक रचना का प्रभाव भक्ति काल के संतो पर काफी हद तक पड़ा था। संतों की बाणी जनभाषा में ही प्रभावी हुई थी। डॉ0 प्रभाकर माचवे के अनुसार अमीर खुसरो के व्यापक और गहरे प्रभावों को समझ लिए थे। उन्ही के षब्दों में ''खुसरो की हिन्दवी भाषा का असर बाद के साहित्य पर हुआ है। इंषा–अल्लाह खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' नहीं लिखी जाती, अगर यह भाषा पहले से परंपरा में षामिल नहीं होती, और उसका अस्तित्व कविता के अलावा गद्य में भी अपनाया न जाता।''[5]

अमीर खुसरो भाषा की समझ रखने के साथ–साथ दूरदर्षी भी थे। वे हिन्दवी की क्षमता को उसी समय समझ लिए थे। वही हिन्दी आज संसार की महत्त्वपूर्ण भाषा बन गई है, जिसको कभी अमीर खुसरो ने अपने काव्य रचना के लिए चयन किए थे। इससे बड़ा प्रभाव साहित्य के क्षेत्र में और कुछ नहीं हो सकता है। उनकी काव्यषैली का प्रभाव आने वाले कवियों पर भी पड़ा। भारतेन्दु हष्चिन्द्र भी अमीर खुसरो की पहेली, मुकरी षैली से प्रभावित हुए, जैस–

1–'सब गुरुजन को बुरो बतावै।
अपनी खिचड़ी अलग पकावै।।
भीतर तत्व न झूठी तेजी,
क्यों सखी सजन? नहीं अंग्रेजी।[6]

2–''तीन बुलाये तेरह आवे।

निज–निज विपता कोई सुनावै।।
आँखें फुटा भरा न पेट।
क्यों सखि सज्जन, नहीं ग्रेजुएट/[7]
3–''रूप देखावत सरबल लूटै।
फंदे में जो पड़े न छूटै।
कपट कटारी हिय में हूलिस।
क्यों सखि सज्जन, ना सखि पुलिस।।''[8]

अमीर खुसरो के प्रभाव से दक्खिनी कवि भी अछूता नहीं रहे। दक्खिन के अनेक कवियों ने खुसरो की काव्यषैली का अपने काव्य लेखन में अपनाए थे। वे ख्याल तथा दोहा षैली को भी अपने साहित्यिक लेखन में अपनाए थे। उनके द्वारा रचित खयाल का उदाहरण निम्न है–

''अब सन्देसा मुझसे षह का जब कब भागो अंत मिले।
पीर प्रेम के हेड़े मेरे नैनों झाँयु नो कंकर मिले।
निस दिन जागे विरह भारी न नींदा देखौ नैन पड़े।
पलकें मेरी आग बले क्यों सपने देखूँ सो खड़े।
कौले पिया तुझ आस लगी मन आस लगी तुझ रहन।
जब का झाँसा तें मुझ लाया इन तिल मुझे साह रहें।
ना का पनिया मुझको लागा लोग दिवानी देख हँसे।
जग ही हाँसी क्या मुझ होय, कहो सिरीजन कहाँ बसे।[9]

दक्खिन के ही षेख अब्दुल कुद्दुस हिन्दी के महान् कवि थे। इनके लिखे दोहे अमीर खुसरो के दोहो से मिलती–जुलती हैं। इनके लेखन कार्य पर अमीर खुसरो के लेखन का काफी हद तक प्रभाव पड़ा था।

क–यह जग नाही बाज पी बूझ बिरहम न ग्यान।
से पानी सो बुलबुला, साइ सरवर जान।''[10]
ख–''एक ओहू एकी मास, एकी सरवर एकी हास।
गुर मुख बूझ बिरहन न ग्यान, मैं तिरलोक एके जान।''[11]
ग–''जिधर देखूँ हे सखी, देखूँ होर न कोय
छेखा बूझ विचार मैं सभी आपी सोय।''[12]

उपर्युक्त उदाहरणों से यह बात साफ हो जाती है कि अमीर खुसरो का प्रभाव दक्खिन भारत के साहित्यकारों पर भी पड़ा था। डॉ0 पांचाल के अनुसार, ''अमीर खुसरो का दक्खिन हिन्दी काव्य पर सबसे अधिक और प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा था। दक्खिन एक प्रकार से दिल्ली की समीपवर्ती बोली अर्थात् हरियाणवी और खड़ी बोली का ही एक ही रूप है। खुसरो ने हिन्दी के जिस रूप को साहित्य में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया था, वह क्षेत्र की भाषा के रूप में परिणत होती जा रही थी। अमीर खुसरो के पष्चात् कई कारणों से उत्तर में इस भाषा को और अधिक विकसित होने का इतना अवसर नहीं मिल पाया था। किन्तु दक्खिन में दक्खिन के साहित्य में यह भाषा पूर्णतया विकसित हुई थी। इसमें ख्वाजा वन्दा नवाज गेसू दराज (1322–1423) सें लेकर वली 1730 तक अनेक लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी के इस रूप को समृद्ध किया था और आगे बढ़ाने का काम भी किए। इस क्षेत्र के कुछ प्रमुख साहित्यकार हैं, जैसे षह मिराजी, जानम, इब्राहिम, आदिल षाह, रूस्तमी, गवासी आदि का नाम उल्लेखनीय है।''[27]

पांचाल साहब के अनुसार यह भी कहा जाता है कि अमीर खुसरो दक्खिन आए थे। वे देवगिरी और वारंगल का वर्णन किए हैं। आगे लिखते हैं कि इन कवियों पर अमीर खुसरो का प्रभाव पड़ा था। मुल्ला वजही की कालजयी रचना 'सबरस' में अमीर खुसरो का यह दोहा उद्धृत है–

''पंखा होकर मैं डुली साती तेरा चाव।
मंजु जलती को जन्म गयों तेरे लेखन बाद।''

दक्खिन भारत के कवियों द्वारा भाषा के लिए हिन्दी अथवा हिन्दवी का अधिकतर प्रयोग किया है। अमीर खुसरो से प्रभावित होकर कई मसनवियाँ लिखी गई, जैसे–लैला–मजनू। गजलों का विकास दक्खिन भारत में ही हुआ था।[13] आज के समय में गजलों की लोकप्रियता किसी छिपी नहीं है।

अमीर खुसरो के साहित्यिक कृतियों के विवेचन यह बात तो पूर्णतः स्पष्ट है कि बाद के साहित्यकारों पर अमीर खुसरो का प्रभाव बहुत हद तक पड़ा था। अमीर खुसरा के भाव, भाषा की षैली, कुछ नया करने की ललक, भाषाओं की खोज में लगे रहना आदि का प्रभाव बाद के साहित्यकारों में परिलक्षित होते हैं। उनके साहित्यिक प्रभाव उत्तर से लेकर दक्खिन भारत तक देखे जा सकते हैं।

उत्तर और दक्षिण की साहित्य धारा में अमीर खुसरो के प्रभाव एक तरह से अमीट छाप की तरह ही है। हालाँकि, इस क्षेत्र में और अधिक और व्यापक षोध करने की आवष्यकता है। इसके लिए स्वतंत्र रूप से कार्यकर्ताओं की आवष्यकता होगी, जिनमें अमीर खुसरो के जैसा ही खोजी प्रवृत्ति हो। उनमें भाषा के प्रति प्राकृतिक लगाव था। पृथ्वी पर ऐसे समर्पित लोग बहुत कम ही मिलते हैं। उनका साहित्य पर कितना प्रभाव पड़ा है, इसका अंदाज इसी से लगा सकते हैं कि लगभग सात सौ साल बीत जाने के बाद भी उनकी कृति आज के भारतीय जनमानस में पूर्व जैसा ही विद्यमान् है।

आज भी इनके साहित्य का प्रभाव भारत के जनमानस में किसी–न–किसी रूप में देखने को मिल ही जाता है। हम उनके बारे में यह कह सकते हैं कि वे सृजनकर्ता, दूरदर्षी, भाषा पारखी, जनमानस प्रेमी आदि गुणों से संपन्न व्यक्ति थे। आने वाली पीढ़ी उनके साहित्यिक देन को कभी भी भूला नहीं सकती है। विषेषकर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उनकी कृति अमर हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. अमीर खुसरो : भावात्मक एकता के अग्रदूत, पृ0 70
2. वही, पृ0 197
3. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, चौथा भाग, पृ0 30, सं0 आचार्य परषुराम चतुर्वेदी
4. अमीर खुसरो : भावात्मक एकता के अग्रदूत, पृ0 71
5. वही, पृ0 52
6. भारतेन्दु ग्रंथावली, पृ0 810–811, दूसरा खण्ड
7. वही, पृ0 811 दूसरा खण्ड
8. वही, पृ0 811 दूसरा खण्ड
9. अमीर खुसरो का हिन्दी काव्य संसार : नये संदर्भों की तलाष, पृ0 139–140
10. वही, पृ0 141
11. वही, पृ0 142
12. अमीर खुसरा : भावात्मक एकता के अग्रदूत, पृ0 198
13. वही, पृ0 198–199